**गुरु नानक – सबद २७**

**बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥**

**जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ५**

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥
वडा दाता तिलु न तमाइ ॥
केते मंगहि जोध अपार ॥
केतिआ गणत नही वीचारु ॥
केते खपि तुटहि वेकार ॥
केते लै लै मुकरु पाहि ॥
केते मूरख खाही खाहि ॥
केतिआ दूख भूख सद मार ॥
एहि भि दाति तेरी दातार ॥
बंदि खलासी भाणै होइ ॥
होरु आखि न सकै कोइ ॥
जे को खाइकु आखणि पाइ ॥
ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥
आपे जाणै आपे देइ ॥
आखहि सि भि केई केइ ॥
जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥
नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥

**सार:** प्रगति एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया है जो हमारे जीवन के हर पहलू को छूती है। जैसे-जैसे जागरूकता प्रकृति के नियमों के साथ प्रवाहित होने लगती है, क्रियाएँ अधिक सहज और संतुष्ट हो जाती हैं। यह सद्गुणों के साथ एक सहज संबंध की सुविधा देती हैं, जो हमें हमारे सच्चे स्वंय और हमारे आस-पास के सभी लोगों से निकटता का रिश्ता बनाते हैं।

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥

नेक कर्मों से होने वाली प्रगति को लिखा नहीं जा सकता।

वडा दाता तिलु न तमाइ ॥

सिद्ध-बुद्धि करने वाले दाता के मन में रत्ती भर भी लालच नहीं होता।

केते मंगहि जोध अपार ॥

कई अनंत के ज्ञान पर विजय पाने के लिए ज्ञान की याचना करते हैं।

केतिआ गणत नही वीचारु ॥

बहुत से विचार हैं जिनका हिसाब नहीं दिया जा सकता।

केते खपि तुटहि वेकार ॥

कई निराशा में हैं और नकारात्मक विचारों से निराश हो जाते हैं।

केते लै लै मुकरु पाहि ॥

कई ज्ञान तो हासिल कर लेते हैं लेकिन उसे आत्मसात करने से कतराते हैं।

केते मूरख खाही खाहि ॥

कई अज्ञानी हैं जो जमा करते रहते हैं।

केतिआ दूख भूख सद मार ॥

कई लालच से परेशान हैं और आध्यात्मिक सज़ा की स्थिति में रहते हैं।

एहि भि दाति तेरी दातार ॥

मन की सभी विविध अवस्थाएँ सर्वव्यापी का उपहार हैं।

बंदि खलासी भाणै होइ ॥
बंधन से मुक्ति प्रकृति के नियमों के अनुसार जीने से मिलती है।

होरु आखि न सकै कोइ ॥
प्रकृति के नियमों के निर्णय में किसी का कोई दख़ल नहीं है।

जे को खाइकु आखणि पाइ ॥
वे अज्ञानी, जो दावा करते हैं कि प्रकृति के नियमों के निर्णयों पर उनका अधिकार है।

ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥
उन्हें अपनी अज्ञानता का एहसास होता है जब उन्हें निराशा का सामना करना पड़ता है।

आपे जाणै आपे देइ ॥
अदृश्य सर्वव्यापी चेतना अधिकार प्रदान करने के प्रति जागरूक है।

आखहि सि भि केई केइ ॥
कुछ कम लोग ही प्रकृति के नियमों से सहमत होते हैं।

जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥
जो लोग प्रकृति के नियमों को स्वीकार करते हैं और उनकी सराहना करते हैं वह धन्य हैं।

नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥
नानक कहते हैं कि वह लोग राजाओं के राजा हैं। (२५)

**तत्त्व:** गुरु नानक के अनुसार, वास्तव में सफल वह लोग हैं जो निहित स्वार्थों के लिए ज्ञान या दुनयावी लाभ जमा नहीं करते हैं, बल्कि इन लाभों का उपयोग सार्वभौमिक भलाई के लिए प्रकृति के नियमों के अनुसार ही करते हैं।

---

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

**Oneness In Diversity Research Foundation**
**वेबसाइट:** [OnenessInDiversity.com](OnenessInDiversity.com)

**ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com**